Date - 17 Feb 2022

भू प्रेक्षण उपग्रह: EOS-04

- हाल ही में भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन के पृथ्वी अवलोकन उपग्रह (EOS-04) और दो अन्य छोटे उपग्रहों (INSPIREsat-1 और INS-2TD) को PSLV-C52 रॉकेट द्वारा वांछित कक्षा में सफलतापूर्वक स्थापित किया गया।
- यह ध्रुवीय उपग्रह प्रक्षेपण यान (पीएसएलवी) की 54वीं उड़ान थी और छह स्ट्रैप-ऑन बूस्टर के साथ इसका 23वां सबसे शक्तिशाली एक्सएल-संस्करण था।

पृथ्वी अवलोकन उपग्रह:

- पृथ्वी अवलोकन उपग्रह रिमोट सेंसिंग तकनीक से लैस उपग्रह हैं, जो पृथ्वी की भौतिक, रासायनिक और जैविक प्रणालियों के बारे में जानकारी एकत्र करते हैं।
- कई पृथ्वी अवलोकन उपग्रहों को सूर्य-तुल्यकालिक कक्षा में तैनात किया गया है।
- इसरो द्वारा लॉन्च किए गए अन्य पृथ्वी अवलोकन उपग्रहों में रिसोर्ससैट-2, 2ए, कार्टोसैट-1, 2, 2ए, 2बी, रिसैट-1 और 2, ओशनसैट-2, मेघा-ट्रॉपिक्स, सरल और स्कैटसैट-1, इनसैट-3डीआर, 3डी शामिल हैं।

तीन उपग्रह प्रक्षेपित:

EOS–04:

- EOS-04 का वजन 1,710 किलोग्राम है और इसे कृषि, वानिकी और वृक्षारोपण, मिट्टी की नमी और जल विज्ञान, और बाढ़ मानचित्रण जैसे अनुप्रयोगों के लिए दस साल की मिशन अवधि के साथ सभी मौसम की स्थिति में उच्च गुणवत्ता वाली छवियां प्रदान करने के लिए डिज़ाइन किया गया है।
- यह रिसोर्ससैट, कार्टोसैट और RISAT-2B श्रृंखला के उपग्रहों के डेटा का पूरक होगा, जो पहले से ही कक्षा में हैं।
- इन उपग्रहों की श्रृंखला में पहला उपग्रह – ईओएस-01 नवंबर 2020 में लॉन्च किया गया था और अभी भी कक्षा में है। EOS-02 को SSLV (स्मॉल सैटेलाइट लॉन्च व्हीकल) नामक एक नए लॉन्च व्हीकल पर लॉन्च किया जाएगा, जबकि EOS-03 का लॉन्च अगस्त, 2021 में विफल रहा।

Yojna IAS

- इसे 529 किमी की सूर्य-समकालिक ध्रुवीय कक्षा में स्थापित किया जाएगा। यह एक रडार-इमेजिंग उपग्रह है, जो इसे 'RISAT' श्रृंखला का हिस्सा बनाता है।
- यह RISAT-1 की जगह लेगा, जिसे वर्ष 2012 में लॉन्च किया गया था, लेकिन पिछले कुछ वर्षों से काम नहीं कर रहा है।
- RISAT सिंथेटिक एपर्चर रडार का उपयोग भूमि की उच्च-रिज़ॉल्यूशन छवियों को प्राप्त करने के लिए किया जाता है।
- ऑप्टिकल उपकरणों की तुलना में रडार इमेजिंग का एक प्रमुख लाभ यह है कि यह मौसम, बादलों या कोहरे या सूर्य के प्रकाश की कमी से अप्रभावित रहता है।
- यह सभी परिस्थितियों में और हर समय उच्च-गुणवत्ता वाली छवियों को कैप्चर कर सकता है, जिससे यह निगरानी के लिए एकदम सही हो जाता है।

INSPIREsat-1:

- INSPIREsat-1 अनुसंधान और शिक्षा में अंतर्राष्ट्रीय उपग्रह कार्यक्रम के तहत नियोजित उपग्रहों के एक समूह का हिस्सा है, जिसमें लघु-अंतरिक्ष यान प्रणाली और पेलोड केंद्र (SSPACE), कोलोराडो विश्वविद्यालय (US), नानयांग द टेक्नोलॉजिकल यूनिवर्सिटी (NTU) शामिल हैं। स्मॉल-स्पेसक्राफ्ट सिस्टम और पेलोड सेंटर (SSPACE), सिंगापुर और नेशनल सेंट्रल यूनिवर्सिटी (NCU), ताइवान से मिलकर बनता है।
- INSPIREsat-1 में 1 किलो वजन के दो वैज्ञानिक नीतभार और एक साल का मिशन है, जिसका उद्देश्य आयनोस्फीयर (पृथ्वी के ऊपरी वायुमंडल का हिस्सा) और सूर्य की कोरोनल हीटिंग प्रक्रियाओं की गतिशीलता की समझ में सुधार करना है।

INS-2TD:

- INS-2TD मार्च 2022 में लॉन्च होने वाले पहले भारत-भूटान संयुक्त उपग्रह के लिए एक प्रौद्योगिकी प्रदर्शक है।
- दोनों देशों ने पिछले साल एक अंतरिक्ष समझौते पर हस्ताक्षर किए, जिसके तहत भूटानसैट या आईएनएस-2बी को पीएसएलवी रॉकेट द्वारा मार्च 2022 में लॉन्च किया जाएगा।
- INS-2TD के थर्मल इमेजिंग कैमरे पृथ्वी के अवलोकन के लिए हैं, जैसे भूमि और पानी की सतह के तापमान का अनुमान लगाना और जंगल और पेड़ के आवरण की पहचान करना।

भारत के अंतरिक्ष उपग्रह:

- भारत में वर्तमान में 53 परिचालन उपग्रह हैं, जिनमें से 21 पृथ्वी अवलोकन हैं और अन्य 21 संचार आधारित हैं।
- आठ नौवहन उपग्रह हैं, जबकि शेष तीन विज्ञान उपग्रह हैं।

Yojna IAS

देविका नदी परियोजना

- हाल ही में केंद्र द्वारा सूचित किया गया है कि 190 करोड़ से अधिक की लागत वाली देविका परियोजना को जून 2022 तक पूरा कर लिया जाएगा।

देविका नदी परियोजना:

- राष्ट्रीय नदी संरक्षण योजना (एनआरसीपी) के तहत मार्च 2019 में इस परियोजना पर काम शुरू किया गया था।
- परियोजना के तहत देविका नदी के तट पर स्नान घाटों का विकास, अतिक्रमण हटाने, प्राकृतिक जल निकायों का जीर्णोद्धार और श्मशान भूमि के साथ जलग्रहण क्षेत्रों का विकास।
- इस परियोजना में तीन सीवेज उपचार संयंत्रों का निर्माण, 129.27 किलोमीटर लंबा सीवरेज नेटवर्क, दो श्मशान घाटों का विकास, सुरक्षा बाड़ लगाना और भूनिर्माण, छोटे जलविद्युत संयंत्र और तीन सौर ऊर्जा संयंत्र शामिल हैं।
- परियोजना के पूरा होने पर नदियों का प्रदूषण कम होगा और पानी की गुणवत्ता में सुधार होगा।

देविका नदी का महत्व:

- देविका नदी जम्मू और कश्मीर के उधमपुर जिले में सुध (शुद्ध) महादेव मंदिर से निकलती है और पश्चिमी पंजाब (अब पाकिस्तान में) की ओर बहती है जहां यह रावी नदी में मिलती है।
- नदी का धार्मिक महत्व भी है क्योंकि इसे हिंदुओं द्वारा गंगा नदी की बहन के रूप में मान्यता प्राप्त है।
- देविका पुल का उद्घाटन जून 2020 में उधमपुर में किया गया था। इस पुल के निर्माण का उद्देश्य यातायात की भीड़ से निपटने के अलावा सेना के काफिले और वाहनों को सुगम मार्ग प्रदान करना है।

राष्ट्रीय नदी संरक्षण योजना:

- राष्ट्रीय नदी संरक्षण योजना (NRCP) एक केंद्रीय वित्त पोषित योजना है जिसे वर्ष 1995 में नदियों में प्रदूषण को रोकने के उद्देश्य से शुरू किया गया था।
- राष्ट्रीय नदी संरक्षण योजना (एनआरसीपी) और राष्ट्रीय गंगा नदी बेसिन प्राधिकरण (एनजीआरबीए) के तहत नदी संरक्षण से संबंधित विभिन्न कार्यक्रम संचालित किए जा रहे हैं।
- राष्ट्रीय गंगा परिषद, जिसे गंगा नदी के कायाकल्प, संरक्षण और प्रबंधन के लिए राष्ट्रीय परिषद के रूप में भी जाना जाता है, ने राष्ट्रीय गंगा नदी बेसिन प्राधिकरण (NRGBA) की जगह ले ली है।

एनआरसीपी के तहत निर्मित गतिविधियां:

- खुले नालों के माध्यम से नदी में बहने वाले कच्चे सीवेज को रोकने और इसे उपचार के लिए डायवर्ट करने के लिए दिशा अवरुद्ध और दिशा परिवर्तन कार्य।
- डायवर्ट किए गए सीवेज के उपचार के लिए सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट / सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट।
- खुले में शौच को रोकने के लिए नदी तट पर कम लागत वाले शौचालय।

Yojna IAS

- लकड़ी के उपयोग को संरक्षित करने और शवों का उचित दाह संस्कार सुनिश्चित करने के लिए विद्युत शवदाह गृह और बेहतर लकड़ी के श्मशान का निर्माण।
- नदी तट विकास कार्यों जैसे स्नान घाटों का सुधार।
- जन जागरूकता और जनभागीदारी।
- नदी संरक्षण के क्षेत्र में मानव संसाधन विकास (एचआरडी), क्षमता निर्माण, प्रशिक्षण और अनुसंधान।
- मानव आबादी के साथ संपर्क सहित स्थान विशिष्ट स्थितियों के आधार पर अन्य विविध कार्य।

लस्सा बुखार

- हाल ही में ब्रिटेन में लस्सा बुखार से पीड़ित तीन लोगों की मौत हो गई। इन मामलों को पश्चिम अफ्रीकी देशों की यात्रा से जोड़ा गया है।

लस्सा बुखार:

- लासा बुखार का कारण बनने वाला वायरस पश्चिम अफ्रीका में पाया जाता है और पहली बार 1969 में नाइजीरिया के लासा में खोजा गया था।
- यह बुखार चूहों द्वारा फैलता है और मुख्य रूप से सिएरा लियोन, लाइबेरिया, गिनी और नाइजीरिया सहित पश्चिम अफ्रीका के देशों में पाया जाता है, जहां यह (लासा बुखार) स्थानिक है।
- माटोमस चूहों में घातक लासा वायरस फैलाने की क्षमता होती है।

फैलाव:

- एक व्यक्ति संक्रमित हो सकता है जब वह किसी संक्रमित चूहे (जूनोटिक रोग) के मूत्र या मल से दूषित भोजन या घरेलू सामान के संपर्क में आता है।
- कभी-कभी यह संक्रमित शारीरिक तरल पदार्थ या आंख, नाक या मुंह जैसे श्लेष्मा झिल्ली के संपर्क में आने से एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में फैल सकता है।
- स्वास्थ्य देखभाल परिदृश्य में व्यक्ति-से-व्यक्ति संचरण अधिक है।

लक्षण:

- इसके सामान्य लक्षणों में हल्का बुखार, थकान, कमजोरी और सिरदर्द शामिल हैं।
- गंभीर लक्षणों में रक्तस्राव, सांस लेने में कठिनाई, उल्टी, चेहरे की सूजन और छाती, पीठ और पेट में दर्द शामिल हैं।
- आमतौर पर बहु-अंग विफलता के परिणामस्वरूप, लक्षणों के शुरू होने के दो सप्ताह के भीतर रोगी की मृत्यु हो सकती है।

इलाज:

Yojna IAS

- लस्सा बुखार के लिए एंटीवायरल दवा 'रिबाविरिन' एक प्रभावी उपचार प्रतीत होता है, लेकिन बीमारी के मामले में तुरंत दिया जाना चाहिए।

मेदाराम जात्रा उत्सव 2022

- जनजातीय मामलों के मंत्रालय द्वारा मेदाराम जात्रा उत्सव 2022 और जनजातीय संस्कृति महोत्सव के लिए 26 करोड़ रुपये का बजट आवंटित किया गया है।
- तेलंगाना के दूसरे सबसे बड़े आदिवासी समुदाय कोया जनजाति द्वारा मनाए जाने वाले चार दिवसीय कुंभ मेले के बाद मेदाराम जात्रा भारत में दूसरा सबसे बड़ा मेला है।

प्रमुख बिंदु

- मेदारम जात्रा को 'संमक्का सरलम्मा जात्रा' के नाम से भी जाना जाता है।
- यह एक आदिवासी त्योहार है जो एक अन्यायपूर्ण कानून के खिलाफ शासकों के खिलाफ एक मां और बेटी, सम्मक्का और सरलम्मा की लड़ाई का प्रतीक है।
- यह तेलंगाना राज्य में मनाया जाता है। इसकी शुरुआत वारंगल जिले के तड़वई मंडल के मेदारम गांव से होती है.
- मेदारम एथुरनगरम वन्यजीव अभयारण्य में एक दूरस्थ स्थान है, जो दंडकारण्य का एक हिस्सा है, जो इस क्षेत्र का सबसे बड़ा जीवित वन क्षेत्र है।
- यह "माघ" (फरवरी) के महीने में पूर्णिमा के दिन दो साल में एक बार मनाया जाता है।
- लोग देवताओं को अपने वजन के बराबर बंगाराम/बेलम (गुड़) चढ़ाते हैं और गोदावरी नदी की एक सहायक नदी जम्पन्ना वागु में पवित्र स्नान करते हैं।
- इसे वर्ष 1996 में राजकीय उत्सव घोषित किया गया था।

कोया जनजाति:

- कोया जनजाति तेलंगाना की सबसे बड़ी आदिवासी जनजाति है और तेलंगाना में अनुसूचित जनजाति के रूप में सूचीबद्ध है।
- यह समुदाय तेलगु भाषी राज्यों तेलंगाना और आंध्र प्रदेश में फैला हुआ है।
- कोया लोकप्रिय रूप से खुद को दोराला सट्टम (लॉर्ड्स ग्रुप) और पुट्टा डोरा (ओरिजिनल लॉर्ड्स) कहते हैं। गोंड जनजाति की तरह, कोया अपनी बोली में खुद को "कोइतूर" कहते हैं।
- गोदावरी और सबरी नदियाँ जो अपने मूल क्षेत्र से होकर बहती हैं, का कोया के आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ता है।

आवास और आजीविका:

- कोया मुख्य रूप से स्थायी रूप से बसे किसान हैं। वे ज्वार, रागी, बाजरा और अन्य मोटे अनाज उगाते हैं।

Yojna IAS

भाषा:

- कोया जनजाति के बहुत से लोग अपनी 'कोया भाषा' भूल गए हैं और तेलुगु को अपनी मातृभाषा के रूप में अपनाया है, लेकिन कोया भाषा अभी भी कुछ अन्य हिस्सों में प्रयोग की जाती है।

धर्म और त्यौहार:

- भगवान भीम, कोर्रा राजुलु, मामिली और पोटाराजू कोया जनजाति के महत्वपूर्ण देवता हैं।
- उनके मुख्य त्योहार 'विज्जी पंडम' (बीज आकर्षक उत्सव) और 'कोंडाला कोलुपु' (पहाड़ी देवताओं को खुश करने का त्योहार) हैं। कोया के कई धार्मिक कार्यकर्ता हैं जो अपने धार्मिक जीवन के विभिन्न पहलुओं में भाग लेते हैं।

Swadeep Kumar

Yojna IAS